## अर्थशास्त्र एवं संचालन अनुसंधान का प्रबंधन अनुशासन में योगदान

प्रबंधन के अनुशासन में दो विषयों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक, अर्थशास्त्र (सूक्ष्म Micro और स्थूल Macro दोनों, विशेषकर दूसरा) और दूसरा, ऑपरेशन रिसर्च (ओआर)।

अर्थशास्त्री "बाकी चीजें समान" की आड़ में बहुत सी (अक्सर अस्थिर) धारणाएँ (assumption) बनाते हैं, लेकिन फिर वे पीछे मुड़कर नहीं देखते कि क्या धारणाएँ सच हो रही हैं? और यदि नहीं, तो क्या सुधारात्मक कार्रवाई की जानी चाहिए, यह सुनिश्चित करने के लिए लिया गया कि अंतिम परिणाम प्राप्त हो जाएं।

जहां धारणाएं नहीं फलित होती या बहुत देर से (और चुभन महसूस होने के बाद ही) इसका का पता चलता है, तो धारणाओं का एक और सेट बना लिया जाता है . इस प्रकार (अक्सर अस्थिर) धारणाओं की एक श्रृंखला के कारण इनपुट-आउटपुट संबंध ब्लैक बॉक्स में बदल जाते हैं और अक्सर उस अर्थव्यवस्था की दिशा ही बदल जाती है जिसे करने की परिकल्पना की गई थी

डॉ. मन मोहन ने सोचा था कि कोयला ब्लॉकों के आवंटन से बिजली (बिजली) पैदा हो जायेगी, और भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास हो जाएगा. लगता है वह भूल गए थे कि उस कोयले को खान से निकालना और परिवहन भी करना पड़ता है। उन्होंने भारतीय व्यापारियों के व्यवहार/आचरण और उनके योग्यता के बारे में गलत धारणाएँ बनायीं और कीमत चुकाई। यदि उन्होंने आवंटन के बाद मॉनिटरिंग कर इसकी जांच की होती कि कोयला निकाला जा रहा है या नहीं, तो इतने वर्षों तक इसका आवंटन जारी नहीं रखा होता । उम्मीद है कि पीएम मोदी ऐसी धारणा नहीं बना रहे हैं, हालाँकि अभी तक इसका कोई संकेत नहीं है कि व्यस्त

प्रधानमंत्री होने के कारण वह उसी जाल में नहीं फंस रहे हैं। मोदी यह भी भूल जाते हैं कि मीडिया वालों ने उनका नाम भी दो बार बदल दिया है, नरेंद्र मोदी से लेकर नमो और फिर पीएम मोदी तक। स्वतंत्रता के बाद भारत का आर्थिक इतिहास का युग अस्थिर धारणाओं से भरा पड़ा है, अर्थशास्त्रियों द्वारा, जिसके कारण भारत 1950 से अभी तक एक विकासशील देश बना हुआ है, "उड़ान भरने के लिए तैयार"।

दूसरा विषय, OR, संसाधन उपयोग को अनुकूलित करने के लिए एक बढ़िया विषय है । "कुछ बाधाओं अधीन ऑब्जेक्ट फ़ंक्शन को अधिकतम करें"। वे बाधाओं के  जाल (constraints) (मानो वे पवित्र हों)। में फँसा कर रख देते हैं । कौन कहता है कि बाधाएँ पवित्र हैं? क्या बाधाएं पार नहीं की जा सकती?

उदाहरण के लिए, सामान्य परिवहन समस्या के हल में मौजूदा ट्रकों की संख्या  गिन कर ही अनुकूलन (Optimisation) कर लिया जाता है । क्या ऐसा नहीं हो सकता कि ट्रकों की संख्या बढ़ा जाए? क्या नये मार्ग विकसित नहीं किये जा सकते? क्या विकराल प्रतीत होने वाली बाधाओं को कुछ संशोधित नहीं कर सकते किया जाएगा? रचनात्मक समस्या समाधान "बाधाओं" के मूल सिद्धांतों को बदल सकता है। लेकिन व्यवहारिक विज्ञान की इन तकनीकों से अवगत न होने के कारण, ओ.आर विशेषज्ञ प्रबंधकों और नीति निर्माताओं को "दी हुई परिस्थितिओं" के अंतर्गत "सर्वोत्तम समाधान"" से मंत्रमुग्ध कर देते हैं ।

प्रबंध उपकरण (Management tools) के बारे में जागरूकता की कमी के कारण दोनों विषयों में समस्या है व्यवहार विज्ञान की तकनीकें. लेकिन अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों के लिए और/ अथवा, व्यवहार विज्ञान एक अभिशाप है। पर व्यवहार वैज्ञानिक दूसरी ओर, अपनी ही दुनिया में रहते हैं। उनके लिए अर्थशास्त्र और OR विषय "अछूत" हैं इसलिए प्रबंधन क्षेत्र में विशेषज्ञता नहीं है

अति विशेषज्ञता संगठनों को संसाधन के समग्र दृष्टिकोण से लाभ उठाने, उपलब्ध संसाधनों के साथ उपयोग और विकास (जो अक्सर समझे और सराहे नहीं जाते हैं) से वंचित कर देता है